PART-1

पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता:- बर्नहार्ड वारेनियस

भाग-2

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

पुनर्जागरण काल के भूगोलवेत्ता (Geographers of Renaissance Period)

6.बर्नहार्ड वारेनियस (Bernhard Varenius)

वारेनियस की दूसरी पुस्तक **'सामान्य भूगोल'** (Geographia Generalis) 1650 में प्रकाशित हुई। वारेनियस प्रथम भूगोलवेत्ता था जिसने भौतिक भूगोल और मानव भूगोल के मौलिक अंतरों पर विचार किया था। उसने भूगोल को दो वर्गों में विभाजित किया-(1) क्रमबद्ध भूगोल (SystematicGeography), और (2) विशिष्ट या प्रादेशिक भूगोल (Special or Regional Geography)। इस प्रकार वारेनियस प्रथम भूगोलवेत्ता था जिसने क्रमबद्ध भूगोल और प्रादेशिक भूगोल के द्विधात्व (dichotomy) की नींव रखी थी। उसके अनुसार सामान्य भूगोल में विषय के सिद्धान्तों तथा नियमों की और प्रादेशिक भूगोल में विभिन्न प्रदेशों के विशिष्ट स्वरूपों का

वर्णन किया जाता है। वारेनियस के अनुसार सामान्य भूगोल का अभिप्राय क्रमबद्ध भूगोल से है। वारेनियस ने यह भी स्पष्ट किया था कि प्रादेशिक भूगोल सामान्य भूगोल पर और सामान्य भूगोल प्रादेशिक भूगोल पर निर्भर है। इस प्रकार दोनों परस्पर अन्योन्याभ्रित हैं। सामान्य भूगोल में विश्व को एक इकाई मानकर उसके भौतिक दशाओं का अध्ययन किया जाता है जबकि प्रादेशिक (विशिष्ट) भूगोल में विश्व के प्रदेशों तथा विशिष्ट देशों का वर्णन किया जाता है। वारेनियस ने सामाज भूगोल को निम्नांकित 3 भागों में विभक्त किया है-

(1) निरपेक्ष भाग (Absolute part)- यह पार्थिव भाग है जिसमें पृथ्वी के आकार एवं आकृति । महाद्वीपों, महासागरों और वायुमंडल का वर्णन सम्मिलित होता है।

(2) सापेक्षिक भाग (Relative part)- यह ग्रहीय भाग है जिसके अन्तर्गत पृथ्वी का अन्य आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) तथा सूर्य से सम्बंध और विश्व जलवायु पर उसके प्रभाव की व्याख्या की जाती है।

(3) तुलनात्मक भाग (Comparative part)- इसमें पृथ्वी का सामान्य वर्णन, भूतल पर स्थानों की सापेक्ष स्थिति और नौसंचलन के सिद्धान्तों का वर्णन सम्मिलित होता है।

वारेनियस के विचार से भूगोल के अन्तर्गत भूतल की स्थलाकृतियों, जलवायु, जलाशयों, वनों, मरुस्थलों, खनिज पदार्थों, पशुओं और मानव बस्तियों का अध्ययन किया जाता है। उसने सांस्कृतिक भूदृश्य को मानवीय प्रभाव का परिणाम बताते हुए इसके अन्तर्गत निवासियों, उनकी प्रकृति, भाषा, धर्म, कला, संस्कृति, व्यापार, नगर और शासन के वर्णन को सम्मिलित करे पर बल दिया था। वारेनियस प्रथम भूगोलवेत्ता था जिसने बताया कि पृथ्वी पर अधिकतम तापमान भूमध्यरेखीय पेटी में नहीं बल्कि अयन रेखाओं (कर्क और मकर रेखाओं) के समीप स्थित मरुस्थलीय भागों में पाया जाता है। इस प्रकार वारेनियस को सत्रहवीं शताब्दी तक का श्रेष्ठतम् भूगोलवेत्ता माना जाता है।